दाढ़ी

की अहमियत

कुरआन, हदीस, सहाबा और उल्मा की नज़र में

मुरत्तिब
महमूद हसन ग़ाज़ी
(मो0: 9335055437)

दाढ़ी कुरआन शरीफ़ की रौश्नी में :

(1) (इब्लीस ने कहा अल्लाह तआला से) मैं उनको ज़रूर गुमराह करता रहूँगा और उम्मीदें दिलाता रहूँगा और यह सिखाता रहूँगा कि जानवरों के कान चीरते रहें और (यह भी) कहता रहूँगा कि वह ख़ुदा की बनाई हुई सूरतों को बदलते रहें। (4–119)

(2) (हज़रत हारून अ0) कहने लगे कि भाई ! मेरी डाढ़ी और सर के (बालों) को न पकड़िये! मैं तो इससे डरा कि आप ये न कहें कि तुमने बनी इस्राइल में तफ़रका डाल दिया। (20–94)

डाढ़ी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र में

(1) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मूछें कतरवाओं और डाढ़ियां छोड़ दो मजूसियों की मुख़ालिफ़त करो। (मुस्लिम शरीफ़)

(2) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि यह पाँच चीज़ें इंसान की फ़ितरते सलीमा के तकाज़े और दीने फितरत के ख़ास अहकाम हैं, ज़ेरे नाफ़ बालों की सफ़ाई, मूछें तरशवाना, नाख़ुन लेना और बग़ल के बाल लेना (बुखारी)

(3) हज़रत अब्बुल्ला बिन उमर र0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया कि मूँछों को ख़ूब बारीक करो और डाढ़ियाँ छोड़ दो (बुख़ारी शरीफ़)

(4) अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह स0 अपनी डाढ़ी मुबारक के अरज़ (चौड़ाई) और तूल (लम्बाइ) से कुछ तरशवा देते थे। (तिरमिज़ी शरीफ़)

(5) हुज़ूर स0 ने औरतों से मुशाबहत करने (उनके जैसा बनना) वाले मर्दों और मर्दों से मुशाबहत करने वाली औरतों पर लानत फ़रमाइ (बुख़ारी शरीफ़)

(6) एक मर्तबा दरबारे रसूल में किसरा (ईरान का बादशाह) के दो क़ासिद हाज़िर हुए दोनों की डाढ़ियाँ मुंडी हुई थीं और मूँछें बढ़ी हुई थीं उन्हें इस सूरत में देख कर आँ हज़रत स0 को नागवारी हुई फ़रमाया तुम्हारा बुरा हो आख़िर तुम्हें किसने ऐसी सूरत बनाने का हुक्म दिया है? उन्होंने जवाब दिया कि हमारे आक़ा किसरा ने इस पर आँ हज़रत स0 अ0 ने इरशाद फरमाया लेकिन मेरे रब ने मुझको डाढ़ी बढ़ाने और मूँछें कतरने का हुक्म दिया है। (अलबिदाया वन्निहाय:)

(7) हज़रत अबूहुरैरा: र0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0 ने फरमाया मेरी उम्मत के सारे लोग जन्नत में जाँयेंगे मगर जिसने इन्कार किया सहाबा ने अर्ज़ किया इंकार कौन करता है? फरमाया जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में दाख़िल होगा और जिसने नाफ़रमानी की उसने इंकार किया (बुखारी शरीफ़)

(8) हज़रत आयशा र0 से मरवी है कि आप स0 जब रंजीदा होते तो डाढ़ी मुबारक को हाथ से पकड़ लेते। (मजअइज्जबाएद 6)

(9) हज़रत अनस बिन मालिक र0 से रिवायत है कि जब आप स0 वज़ू करते तो हाथ

Scanned with OKEN Scanner

डाढ़ी सहाबा र० की नज़र में

पानी लेते फिर हाथ डाढ़ी में दाखिल करके खिलाल करते। (अबू दाऊद स०न० 145)

(1) हज़रत अब्दुल्ला इब्ने उमर र० हज व उमरा के मौके पर सर का हलक कराते तो डाढ़ी को मुट्ठी से पकड़ लेते और जो मिकदार जाएद होती उसे काटने का हुक्म देते (बुखारी शरीफ)

(2) हज़रत अबु हुरैरा र० डाढ़ी को पकड़ लेते फिर जो मिकदार मुट्ठी से जाएद होती उसे काट देते (बैहकी शरीफ)

(3) हज़रत हसन र० मुट्ठी से जाएद लम्बी डाढ़ी को काट दिया करते थे (इब्ने अबी शैबा 8)

(4) हज़रत फारूक आज़म र० ने एक शख़्स की डाढ़ी बढ़ी देखी तो उसे खींचने लगे और हुक्म दिया कि मुश्त (मुट्ठी) से जो ज़्यादा हो उसे काट दो (उमदतुल कारी 22 शमायल कुबरा 2)

(5) हज़रत अली र० की डाढ़ी इस कदर घनी थी कि सीने के दोनों तरफ को घेरे हुए थी (एहयाउल उलूम 2)

डाढ़ी उलमाए किराम की नज़र में

(1) इमाम जाफर सादिक र० से मरवी है अगर कोई कौम खुदा की इबादत करे और नमाज़ रोज़ा हज ज़कात सब कुछ बजा लाए मगर आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी अमल के बारे में बतौर एतिराज़ ये कहे कि आपने ये क्यों किया या आप स० के किसी हुक्म के मुताल्लिक दिल में तंगी महसूस करे तो सौमो सलात वगैरह आमाल होने के बावजूद काफिर व मुशरिक के हुक्म में है (रू. ल मआनी जि0 5–65)

(2) इमाम रब्बानी मुजदिद अल्फ़ सानी र० फ़रमाते है कि तमाम सुन्नत खुदा वन्द आलम की पसन्द फ़रमूदा हैं और जो चीजें ख़िलाफ़ सुन्नत है वह शैतान की पसन्द करदह हैं (मकतूबात जि 1–255)

(3) शैखुल हदीस मौलाना मो0 ज़करिया र० फ़रमाते हैं मुझे ऐसे लोगों को (जो डाढ़ी मुंडाते हैं) देख कर यह ख़्याल होता है कि मौत का कोई वक़्त मुकर्रर नहीं और इस हालत में अगर मौत वाके हुई तो क़ब्र में सबसे पहले चेहरे अनवर की जियारत होगी तो किस मुँह से चेहरे अनवर का सामना करेंगे (डाढ़ी का वजूब)

(4) मौलाना मोहम्मद यूसुफ़ र० फ़रमाते हैं "हदीस में फ़रमाया गया है मूँछें कटवाना और डाढ़ी रखना मुसलमानों का शिआर है इसके बर अक्स मूँछें बढ़ाना और डाढ़ी मुंडाना मजूसियों और मुशरिकों का शिआर है और आँ हज़रत स० ने अपनी उम्मत को मुसलमानों का शिआर अपनाने और मजूसियों के शिआर की मुख़ालफत करने की ताकीद फ़रमाई है इसलामी शिआर को छोड़कर किसी गुमराह कौम का शिआर एख्तियार करना हराम है चुनान्चे आँ हज़रत स० का इरशाद है जो शख़्स किसी कौम की मुशाबहत (उनके जैसा

बनना) एख्तियार करता है वह उन्हीं में से गिना जाता है। बस जो लोग डाढ़ी मुंडाते हैं वह मुसलमानों का शिआर तर्क करके अहले कुफ्र का शिआर अपनाते हैं जिसकी मुखालिफत का रसूलुल्लाहु स० ने हुक्म फरमाया इसलिये इनको बईदे नबवी से डरना चाहिये कि उनका हशर भी क्यामत के दिन उन्हीं गैर कौमों में न हो (आपके मसाएल और उनका हल जि० 7)

(5) मौलाना मो० सलमान साहब मन्सूरपुरी कासमी फरमाते हैं अफसोस है कि दीगर कौमें जिनका दामन तसव्वुरे आखिरत से खाली है वह तो अपने शआएर का हद दर्जा एहतिराम करें और हर सतह पर अपनी अलग शिनाख्त बनाने की कोशिश करें और मुसलमान जो दुनिया में तमाम इंसानियत की फलाह व बहबूद का जामिन और आखिरत में कामियाबी का परवाना लेकर आया है वह अपनी शिनाख्त बनाने के बजाए दुसरी कौमों की अलामतों में जम होकर (मिलकर) अपना वजूद ही कल अदम करने पर तैयार हो यह सूरते हाल अफसोस नाक ही नहीं बल्कि मुस्तकबिल के लिये तशवीशनाक भी है आज हिन्दुस्तान में नज़र डालकर देखिये पूरे मुल्क में सिख कौम के अफराद की तादाद सिर्फ दो करोड़ है लेकिन यह लोग अपने शआएर और शिनाख्त के मज़बूती से पाबन्द हैं कि सैकड़ों अफ़राद में अगर एक भी सिख होगा तो वह अपनी पगड़ी और डाढ़ी व किरपान के ज़रिये दूर ही से पहचाना जायेगा – जबकि मुसलमान जो मुल्क में कमो बेश बीस करोड़ की तादाद में आबाद हैं उनके लिबास तराश खराश किसी चीज़ में भी आम तौर पर ऐसी शिनाख्त बाकी नहीं रह गई जो उन्हें दूसरों से मुमताज़ करदे (अल्लाह से शर्म कीजिये 105–106)

(6) मुरत्तिब महमूद हसन गाज़ी अर्ज़ करता है हर वह शख्स जिसका यह अकीदा है कि कब्र में हुजूर स० का सामना होगा फ़रिशते आप स० के बारे में सवाल करेंगे वह तो यह सोच कर ही नादिम हो जायेगा और डाढ़ी रख लेगा कि किस मुँह से हुजूर अनवर स० का सामना करेंगे और जब हश्र के मैदान में हुजूर स० के हौज़े कौसर पर प्यास से तड़पते प्यास बुझाने के लिए जायेंगे तो किस मुँह से हुजूर से पानी माँगेगें जबकि-चेहरे पर गैरों के तरीकों से मुहब्बत का ठप्पा लगा होगा। यह वह हकीकतें हैं जिन्हें सोचकर दिले मोमिन तड़प उठेगा और डाढ़ी रखने का पक्का इरादा कर लेगा और साथ ही उसकी नज़र इसपर भी रहेगी कि डाढ़ी की मिकदार इस कदर ज़रूर हो कि जिससे हुजूर स० की मुराद पूरी हो जाए और हुजूर स० के तर्ज़े अमल और सहाबा के तरीकों से जिस मिकदार का सुबूत मिल रहा है उसपर अमल हो जाये – आयते मुबारक में मौजूद हज़रत हारून अ० की डाढ़ी, हुजूर स० का वजू में अपने हाथ से डाढ़ी में खिलाल का अंदाज़, आँ हज़रत स० का हालते ग़म में अपनी डाढ़ी पकड़ने का मामूल सुन्नते नबवी के अशिक हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर र० का तर्ज़े अमल वाज़ेह तौर पर इस बात की तरफ रहनुमाइ कर रहा है कि हुजूर अनवर स० की डाढ़ी की मिकदार एक मुट्ठी से कम किसी तौर पर नहीं थी इसलिये वह लोग जो साहबे एहतियात हैं वह हरगिज़ इधर उधर की बातों का सहारा लेकर एक मुश्त से कम मिकदार की डाढ़ी पर राजी न होंगे